संस्थान द्वारा कलसुई, चम्बा में आयोजित किसान मेले कि रिपोर्ट

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 23 फरवरी, 2024 को कृषि विज्ञान केंद्र - सरु,जिला - चम्बा, के सहयोग से कलसुई, चम्बा, हि॰प्र॰ में किसान मेले का आयोजन किया, जिसमें कलसुई मेहला, राख़, चंबा एवं आसपास की विभिन्न पंचायतों के लगभग 250 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में **श्रीमती कंचन देवी, भा॰व॰से॰, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहारादून**, बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुई । **डॉ॰ जगदीश सिंह, प्रभाग प्रमुख**, विस्तार प्रभाग एवं मेले के संयोजक ने कहा कि किसान मेला का थीम : वानिकी प्रौद्योगिकियों द्वारा सतत विकास है। **डॉ. संदीप शर्मा,निदेशक**, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने मुख्य अतिथि, अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं उपस्थित किसानों का स्वागत किया। उन्होनें विश्वास जताया कि किसानों को इस मेले के आयोजन से लाभ होगा। **श्रीमती कंचन देवी, महानिदेशक,** ने कहा कि इस परिषद के मुख्य उद्देशय वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं अनुसंधान विस्तार हैं। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहारादून राष्ट्रीय स्तर पर वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार संबंधी गतिविधियों के संचालन हेतु एक प्रमुख संगठन है। राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान प्रणाली में एक शीर्ष निकाय जो आवश्यकता आधारित वानिकी अनुसंधान विस्तार को बढ़ावा देता है और कार्य करता है। परिषद की देश के विभिन्न जैव-भौगोलिक क्षेत्रों में 9 क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों और 5 केंद्रों के साथ अखिल भारतीय उपस्थिति है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान जिसका मुख्यालय शिमला, हिमाचल प्रदेश में है, परिषद के अनुसंधान संस्थानों में से एक महत्वपूर्ण संस्थान है, जो हिमाचल प्रदेश राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर और लद्दाख की वानिकी अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करता है। परिषद और इसके संस्थान वानिकी के क्षेत्र विकसित गतिविधियों, अनुसंधान परिणामों और प्रौद्योगिकियों के विस्तार पर मुख्य ध्यान केंद्रित कर रहे हैं ताकि अनुसंधान के परिणाम और निष्कर्ष अंतिम उपयोगकर्ताओं तक आसानी से पहुंच सकें। इसी श्रृंखला में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला चंबा में इस किसान मेले का आयोजन कर रहा है। निश्चित रूप इस तरह के विस्तार कार्यक्रमों से किसानों, बागवानों और अन्य हितधारकों को विभिन्न संगठनों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को देखने का अवसर प्रदान करते हैं और उन्हें अतिरिक्त आय सृजन के लिए वानिकी गतिविधियों को अपनाने के लिए रुचि पैदा करते हैं। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने समशीतोष्ण औषधीय पौधों के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है और हाल ही में समशीतोष्ण क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की किस्में भी जारी की हैं। बागवानी फसलों के साथ औषधीय पौधों की अंतर-फसल के लिए एक तकनीक भी विकसित की है, जो किसानों की अतिरिक्त आय सृजन के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू हो सकता है। उन्होंने आगे बताया कि परिषद द्वारा अंतर-संगठनों में भी समय के साथ अलग-अलग काम करने के बजाय सहयोग से काम करने के महत्व का पालन किया जा रहा है। इसलिए, वानिकी के क्षेत्र में समान स्थित संगठनों के साथ निकट सहयोग में काम करना समय की आवश्यकता है, परिषद, राज्य वन विभागों,

विश्वविद्यालयों और अन्य संबंधित विभागों के साथ निकट संपर्क में काम करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। उन्होनें हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी प्राथमिकताओं को सूचीबद्ध करें और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान को इसकी जानकारी दें। कुछ महत्वपूर्ण वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के पहलू पर प्रदेश सरकार के स्तर पर भी उच्च अधिकारियों द्वारा विचार किया जाना समय की आवश्यकता है । संस्थान के निदेशक **डॉ॰ संदीप शर्मा** ने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा,लकड़ी और गैर-लकड़ी दोनों प्रजातियों के पौध की उत्पादकता बढ़ाने के लिए बेहतर रोपण सामग्री विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है, जिससे वानिकी और कृषि से जुड़े लोगों को मदद मिलेगी। किसान औषधीय पौधे उगाकर एवं केंचुआ खाद तैयार कर अतिरिक्त आय कमा सकते हैं। इसके अलावा उन्होनें किसानों से पानी के स्त्रोत संरक्षित करने का आग्रह भी किया। उन्होनें कहा कि संस्थान द्वारा समय समय पर जरूरी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। **डॉ॰ जगदीश सिंह** ने संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यो के बारे में किसानों को अवगत करवाया।

किसान मेले के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा संस्थान द्वारा विस्तार उद्देश्य हेतु हिन्दी भाषा में विकसित संस्थान बारे, औषधीय पौधों, बांस एवं शीतोष्ण हिमालय पर विकसित डॉकुमेंटरी फिल्म्स एवं काला पोपलर, सफ़ेद पोपलर, सेलिक्स, बांस, इत्यादि पुस्तिकाओं/ पेंप्लेटस एवं संस्थान द्वारा विकसित उत्पाद हिम ग्रोथ बुस्टर एवम हिम ट्राइको कवच का विमोचन भी किया। **डॉ इंद्र देव, निदेशक**, शिक्षा, डॉ॰ यशवंत सिंह परमार हॉर्टिकल्चर एवं वानिकी महाविद्यालय नौणी सोलन ने कहा कि वैज्ञानिक तरीके से उच्च घनत्व पौधरोपण द्वारा किसान अपनी पैदावार 2-3 गुना तक बड़ा सकते हैं और मधुमक्खी पालन से अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में लगभग एक लाख सत्तर हजार किसानों ने आर्गेनिक खेती को अपनाया है। **डॉ॰ अभिलाष दामोदरन**, मुख्य अरण्यपाल चंबा वन वृत ने वनों में लगने वाली आग पर चिंता व्यक्त की और लोगों से वन संरक्षण हेतु सहयोग का आवाह्न किया। उन्होनें लोगों से आग्रह किया कि लोग पहले की तरह श्रीअन्न/ मिलेट्स भी उगाएँ। उन्होनें लोगों को अवगत करवाया कि केरल में भी पांगी भरमौर क्षेत्र का काला ज़ीरा बिक रहा है। यह उच्च क्षेत्र की जड़ीबूटियों के लिए उपयुक्त है लोग औषधीय पौधे उगा कर अतिरिक्त आय उगा सकते हैं। उन्होंने केंचुआ खाद से संबन्धित वाक्य लोगों के साथ सांझा किया कि चंबा क्षेत्र का एक व्यक्ति केंचुआ खाद बेच कर 2 लाख रुपये कमा रहा है। **डॉ संजीव चौहान, अनुसंधान निदेशक**, डॉ॰ यशवंत सिंह परमार हॉर्टिकल्चर एवं वानिकी महाविद्यालय नौणी सोलन ने कहा कि सेब, अखरोट और कीवी की ट्रेनिंग के लिए नेपाल से 30 किसानों का समूह विश्वविद्यालय में आ रहा है। स्थानीय लोग भी इसी तरह के प्रशिक्षण प्राप्त करके अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होनें कहा कि किसान नैचुरल फ़ार्मिंग भी अपनाएँ और ऑफ सीज़न सब्जियाँ भी उगाएँ। **डॉ. कुलदीप धीमान, उपनिदेशक**, कृषि विभाग ने सरकार द्वारा किसानों हेतु चलायी जा रही योजनाओं से किसानों को अवगत करवाया ।

मुख्य अतिथि ने मेला प्रदशर्नी का औपचारिक उद्घाटन किया तथा उनका अवलोकन भी किया। मेले में हिमालयन वन अनुसंधान शिमला, वन्य मण्डल चंबा, हॉर्टिकल्चर विभाग, चंबा, कृषि विभाग चंबा एवं कृषि विज्ञान केंद्र, सरु चंबा, डॉ. यशवंत सिंह परमार हॉर्टिकल्चर एवं वानिकी महाविद्यालय द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं कार्यों को प्रदर्शित किया गया। **डॉ॰ जोगिंदर सिंह चौहान,** मुख्य तकनीकी अधिकारी ने संस्थान के प्रदर्शनी स्टॉल में लगी टेक्नोलॉजी एवं उत्पादों के बारे में लोगों को अवगत करवाया। इसके अलावा तकनीकी सत्र हुआ, जिसमें विभिन्न वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों द्वारा किसानों के साथ विस्तृत चर्चा की गयी। चर्चा के मुख्य विषय उत्कृष्ट प्रजातियों के उत्पादन के लिए नसर्री तकनीक, उत्पादकता वृद्धि के लिए गुणवत्ता रोपण

सामग्री तथा इसमें माइकोराइज़ा का उपयोग, लेंटाना का उन्मूलन, केंचुआ खाद का बनाना, आय सृजन के लिए कृषिवानिकी, औषधीय पौधों कि खेती और कृषि वानिकी में कीट और रोग प्रबंधन रहे। विशेषज्ञ द्वारा किसानों के प्रश्नों के उत्तर दिये गए। किसान मेले को आयोजन में हिमालयन वन अनुसंधान के डॉ॰ जगदीश सिंह, डॉ॰ जोगिंदर चौहान, श्री कुलवंत राय गुलशन एवं स्वराज सिंह और कृषि विज्ञान केंद्र सरु, चंबा के डॉ॰ राजीव रैना, डॉ॰ केहर सिंह ठाकुर एवं डॉ ॰ जया चौधरी ने मुख्य भूमिका निभाई। मेले का समापन **डॉ॰ अश्वनी तपवाल**, वैज्ञानिक के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

****

Glimpses of Kisan Mela at Kalsuin, Chamba, HP

Release of documentaries , products and pamphlets by Smt. Kanchan Devi, IFS, DG, ICFRE

Media coverage

कलसुई में प्राकृतिक खेती के बारे में दी जानकारी

कलसुई में आयोजित कृषि मेले में कृषि विभाग चंबा की प्रदर्शनी में मौजूद उपनिदेशक कृषि विभाग डॉ. कुलदीप धीमान व अन्य।

अनंत ज्ञान ब्यूरो, चंबा

उपनिदेशक कृषि विभाग डॉ. कुलदीप धीमान ने बताया कि विकास खंड मैहला के गांव कलसुई में हिमालयन वन अनुसंधान केंद्र शिमला के तत्वावधान में कृषि मेले का आयोजन किया गया।

उन्होंने बताया कि आयोजित किए गए मेले में विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी के माध्यम से किसानों को विभाग से संबंधित विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी

प्रदर्शनी में पोषक अनाजों को किया गया प्रदर्शित

प्रदान की गई। डॉ. धीमान ने बताया कि कृषि विभाग चंबा द्वारा प्रदर्शनी में पोषक अनाजों के साथ-साथ प्राकृतिक खेती के घटकों को प्रदर्शित किया गया।

उन्होंने बताया कि किसानों को कृषि विभाग की योजनाओं से संबंधित जानकारी के लिए पंफ्लेट भी वितरित किए गए।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा कलसुई, चम्बा में किसान मेले का आयोजन

टीम एक्शन इंडिया/ चंबा /हामिद

भावाअशिप हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र-सरु, जिला-चम्बा, के सहयोग से कलसुई, चम्बा में किसान मेले का आयोजन किया, जिसमें कलसुई एवं आसपास की विभिन्न पंचायतों के लगभग 300 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कंचन देवी, भावसेए महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहारादून, बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। गौरतलब है कि कंचन परिषद कि पहली महिला महानिदेशक है और मूल रूप से चंबा कि रहने वाली है। डा. जगदीश सिंह, प्रभाग प्रमुख विस्तार प्रभाग एवं मेले के संयोजक ने कहा कि किसान जिसका थीम रू वानिकी प्रौद्योगिकियों द्वारा सतत विकास है। डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने विश्वास जताया कि किसानों को इस इस मेले के आयोजन से लाभ होगा। कंचन देवी ने कहा कि वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं अनुसंधान विस्तार ने कहा कि इस परिषद के मुख्य उद्देशय हैं।

किसान मेले में सजी विभागों की प्रदर्शनी

शिक्षा परिषद देहरादून की महानिदेशक कंचन देवी ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर पुस्तिकाओं का किया विमोचन

चंबा। पंपलेट का विमोचन करती मुख्यातिथि

चंबा। कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से कलसुई गांव में एकदिवसीय किसान मेले का आयोजन किया गया। इस दौरान किसान मेले में हिस्सा लेते लोग।

दिव्य हिमाचल ब्यूरो-चंबा

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से कलसुई गांव में एकदिवसीय किसान मेले का आयोजन किया गया। इस मौके पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून की महानिदेशक कंचन देवी ने बतौर मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थिति दर्ज करवाई। कंचन देवी ने कहा कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहारादून राष्ट्रीय स्तर पर वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार संबंधी गतिविधियों के संचालन हेतु एक प्रमुख संगठन है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला परिषद के अनुसंधान संस्थानों में से एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है, जोकि हिमाचल प्रदेश राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर और लद्दाख की वानिकी अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करता है। संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा लकड़ी और गैर-लकड़ी प्रजातियों के पौध की उत्पादकता बढ़ाने के लिए बेहतर रोपण सामग्री विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है। इससे वानिकी और कृषि से जुड़े लोगों को मदद मिलेगी। डा. जगदीश सिंह ने संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में किसानों को अवगत करवाया। वन विभाग चंबा के सीसीएफडा. अभिलाष दामोदार ने लोगों से वन संरक्षण में सहयोग का आहवान किया। कृषि विभागके उपनिदेशक डा. कुलदीप धीमान ने सरकार की ओर से किसानों के कल्याण हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए इनका लाभ उठाने का आह्वान किया। इससे पहले मुख्यातिथि कंचन देवी ने संस्थान द्वारा विस्तार उददेय हेतु हिंदी भाषा में विकसित संस्थान, औषधीय पौधों, बांस एवं शीतोष्ण हिमालय पर विकसित डाक्यूमेंटरी फिल्म्स एवं काला पोपलर, सफेद पोपलर, सेलिक्स, बांस, इत्यादि पुस्तिकाओं/पैंफलेटस का विमोचन भी किया। उन्होंने किसान मेले के दौरान विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस दौरान मंच का संचालन कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. केहर सिंह ठाकुर ने किया। इस किसान मेले में कलसुई और आसपास की विभिन्न पंचायतों के लगभग तीन सौ किसानों ने हिस्सा लिया।

चंबा। कलसुई गांव में एकदिवसीय किसान मेले में रंगारंग प्रस्तुति देते कलाकार

****